कक्षा - आठ
पाठ - पाँच

# चिट्ठियों की अनूठी दुनिया

लेखक - अरविंद कुमार सिंह

जन्म - 11 जुलाई 1962

स्थान – बरवारीपुर
सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश)

- *प्राचीन समय में डाकिए को देखकर लोगों के चेहरे खिल जाते थे।*
- *पत्र ही उस समय एक दूसरे के हालचाल जानने का जरिया था।*
- *पहले डाकिए का बहुत सम्मान भी किया जाता था लोगों के लिए वहां देवदूत से कम नहीं था।*

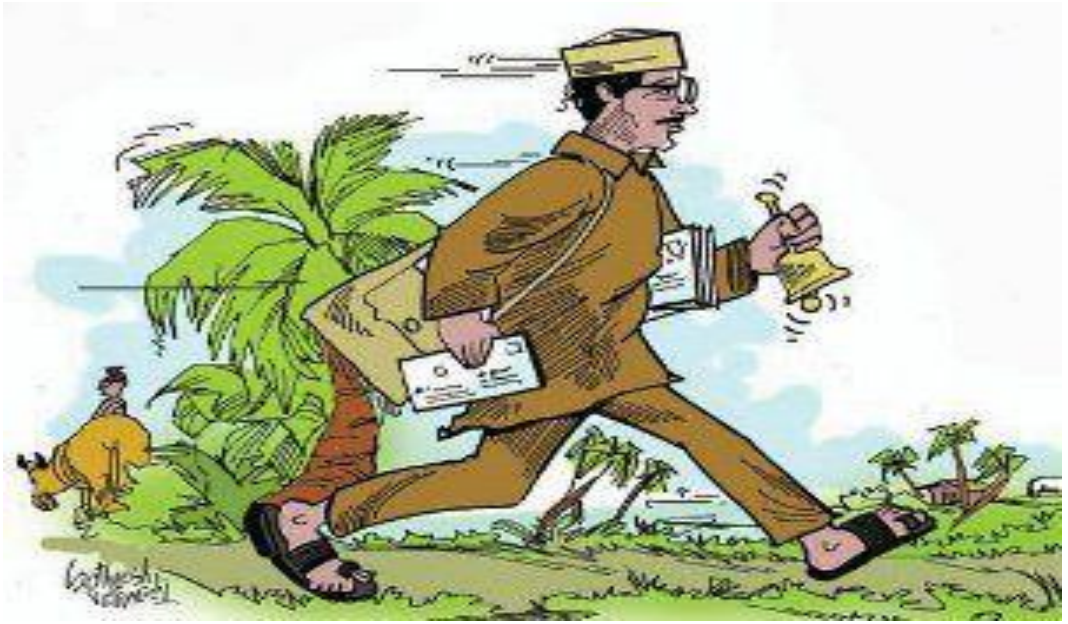

- पत्र लोगों के चेहरों पर मुस्कान बिखेर देते थे।
- पत्र लोगों की जिंदगी का अहम हिस्सा हुआ करता था।
- पत्रों को बार-बार पढ़कर बे आनंद की अनुभूति किया करते थे ।
- पत्रों को इकट्ठा कर लोग उसे पुस्तक का भी रूप दे दिया करते थे।

.....

- *पत्र लेखन से लेखन कला का भी विकास होता है।*
- *मेल और मैसेज भी पत्र लेखन का एक आधुनिक रूप है।*
- *अपने प्रिय जनों के पत्रों को पढ़कर हम फिर से अपनी यादें ताजा कर सकते हैं।*
- *फोन पर की गई बातें अस्थाई होती हैं वही लिखित दस्तावेज स्थाई होते हैं उनसे हम सुरक्षित रहते हैं।*

- *सीमा पर तैनात सिपाहियों के लिए तो पत्र ही जीवन जीने का आधार होते है।*
- *वे अपने परिवार और बच्चों को छोड़कर देश की सेवा में अपना सर्वस्व दे देते हैं।उनके लिए अपने परिवार द्वारा भेजे गए पत्र ही खुशी का साधन होते हैं।*

# भारतीय डाक

- भारतीय डाक की स्थापना 1 अप्रैल 1854 में हुई।
- आज भी भारत में तकरीबन साढ़े चार करोड़ करोड़ पत्र प्रतिदिन डाक में डाले जाते हैं।
- भले ही अब तकनीकियां बढ़ गई है किंतु डाक विभाग ने भी आधुनिकता और तकनीकी को अपनाकर समय-समय पर बदलाव किए हैं

## ➢ डाक टिकट

## ➢ पोस्टकार्ड तथा अंतर्देशीय

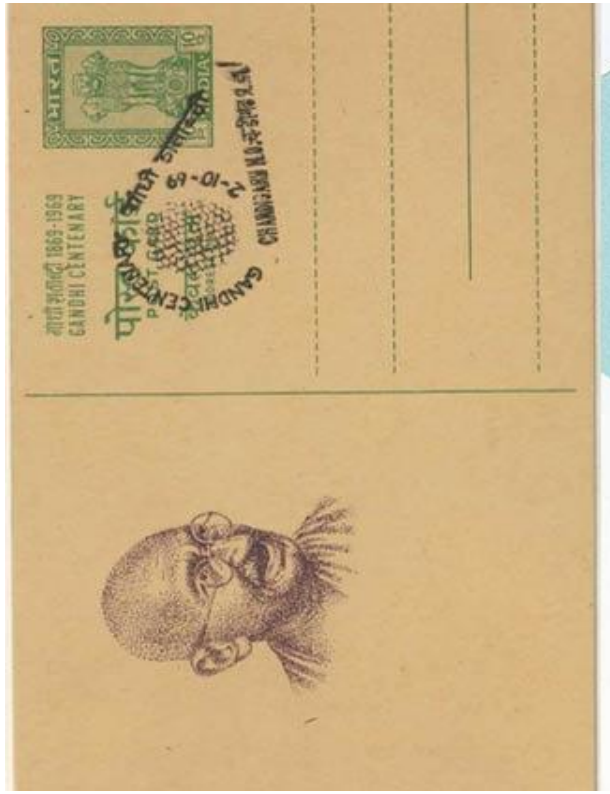

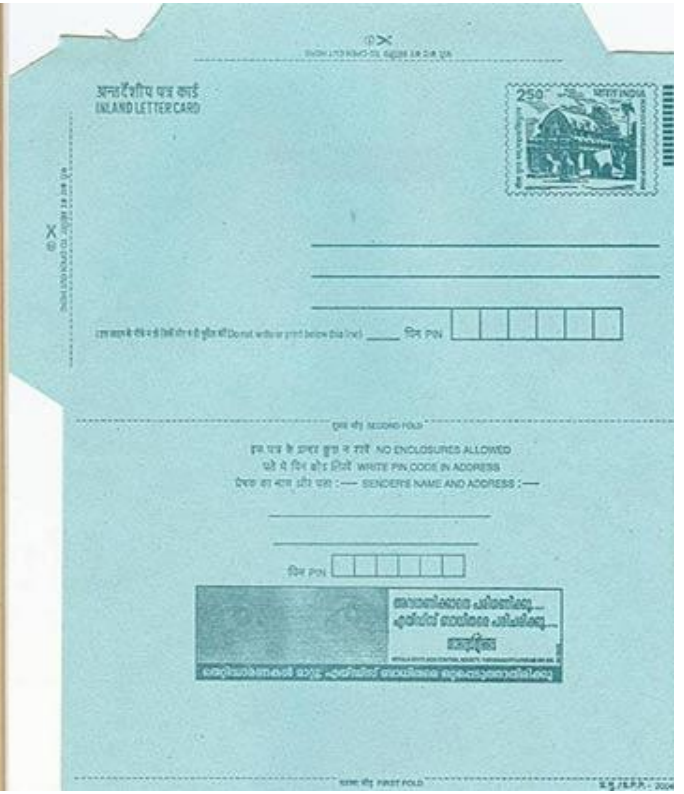

धन्यवाद